# भीष्म साहनी जन्मशतवार्षिकी समारोह की रिपोर्ट

28–29 जनवरी, 2016

खालसा कॉलेज, अमृतसर, पंजाब

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार तथा साहित्य अकादेमी के संयुक्त तत्त्वावधान में भीष्म साहनी जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 28–29 जनवरी, 2015 को खालसा कॉलेज, अमृतसर, पंजाब में किया गया। समारोह की शुरुआत 28 जनवरी 2016 को भीष्म साहनी के जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुई। श्री सत्येंद्र सिंह, पूर्व समकुलपति, गुरुनानक देव विश्वविद्यालय ने इसका उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में भीष्म साहनी के सम्पूर्ण जीवन क्रम को विभिन्न चित्रों द्वारा संजोया गया था। इसमें उनके जीवन की मुख्य घटनाएँ, उनके जीवन पर विभिन्न लेखकों के प्रभाव, ***तमस*** की निर्माण प्रक्रिया पर विभिन्न फ़ोटो पैनल लगाए गए थे। इसमें उनके रावलपिंडी के पुश्तैनी घर से लेकर दिल्ली तक की जीवन–यात्रा को चित्रों द्वारा वर्णित किया गया था। इस चित्र प्रदर्शनी के साथ–साथ साहित्य अकादेमी द्वारा एक पुस्तक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था, जिसमें साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत उनके उपन्यास ***तमस*** के अकादेमी द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में किए गए अनुवाद की पुस्तकें शामिल थीं।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि भीष्म साहनी जन्मशतवार्षिकी पर 8–10 अगस्त को दिल्ली में किए गए कार्यक्रम के बाद यह दूसरा आयोजन है। उन्होंने भीष्म साहनी जी के साहित्यिक अवदान को याद करते हुए कहा कि उनका लेखन हिंदी कथा साहित्य की प्रगतिशील परंपरा का शक्तिशाली दस्तावेज़ है। उनके कथा संसार में भारतीय मध्यम वर्ग का यथार्थवादी चित्रण हुआ है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक श्री सूर्य प्रसाद दीक्षित ने की। उन्होंने भीष्म साहनी को भविष्य दृष्टा लेखक बताते हुए कहा कि वे सच्चे अर्थों में विशिष्ट लेखक थे, जिसने भारत के आम लोगों की इच्छाओं और कामनाओं को समझा और अपने लेखन में उसको प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में गुरुनानक देव विश्वविद्यालय के पूर्व–समकुलपति श्री सत्येंद्र सिंह ने व्याख्यान देते हुआ कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि हम आज उसी खालसा कॉलेज में भीष्म जी को याद कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने कुछ दिन पढ़ाया था। प्रख्यात साहित्यकार श्री ए. अरविंदाक्षन ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि भीष्म साहनी जी का रचना संसार विविध है और उसमें मानव जीवन के सुख–दुख, उसमें आए उतार–चढ़ाव को बड़ी जीवंतता से चित्रित किया गया है। उनकी हर रचना लोक–जीवन से उनके गहरे जुड़ाव को प्रदर्शित करती है। उनका लेखन आज के लेखकों के लिए एक मशाल की तरह है, जो लेखन के अंधेरे को दूर कर सच्ची राह दिखाता है। अंत में धन्यवाद ज्ञापन खालसा कॉलेज के प्राचार्य श्री महेल सिंह ने दिया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में जिसका विषय था 'भीष्म साहनी : रचना का आलोक और साहित्यिक सरोकार', की अध्यक्षता श्री रवेल सिंह ने की तथा श्री सतीश वर्मा, श्री आरसु तथा श्री वेन्ना वल्लभराव ने अपने आलेखों का पाठ किया। सभी वक्ताओं ने उनके विभिन्न विधाओं में लिखे गए कार्य को रेखांकित करते हुए कहा कि यह उनके लेखन का ही प्रकाश है कि आज भी चाहे **तमस** हो या उनके नाटक, पाठकों

को इनको पढ़ने और देखने की ललक अभी भी बनी हुई है। सभी वक्ताओं ने यह स्वीकार किया कि भीष्म साहनी जी का विपुल लेखन आज भी समसामयिक है।

इसी दिन सायं 6.00 बजे विरसा विहार सभागार, गाँधी ग्राउंड के पास, रामजी बाली के निर्देशन में भीष्म साहनी की कहानी 'लीला नंदलाल की' का नाट्य मंचन हुआ। यह कहानी आज के परिवेश पर एक ज़बर्दस्त व्यंग्य है। कहानी का नायक मध्यमवर्गीय युवा है जिसके खून–पसीने की कमाई से लिया गया एक स्कूटर नाटक देखने जाने के दौरान चोरी हो जाता है। आगे पूरे नाटक में स्कूटर प्राप्ति के लिए नायक की मार्मिक दौड़–भाग सामने आती है।

दूसरे दिन शुक्रवार, दिनांक 29 जनवरी 2016 को पूर्वाह्न 10.00 बजे 'भीष्म साहनी : साहित्यिक अवदान' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान श्री रमेश कुंतल मेघ ने की। सत्र में श्री तरसेम गुजराल तथा माधव कौशिक ने अपने आलेखों का पाठ किया। श्री रमेश कुंतल मेघ ने भीष्म साहनी के साहित्यिक अवदान की चर्चा करते हुए कहा कि उनका लेखन ही नहीं बल्कि प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव (1972–1986) रहने के दौरान उनके द्वारा संगठन के लिए किए गए कई महत्वपूर्ण कार्य भी उल्लेखनीय हैं। वे अफ्रो–एशियाई लेखक संघ से भी जुड़े रहे थे।

तृतीय सत्र का विषय 'भीष्म साहनी और उनके नाटक' था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नाट्यकार श्री भानु भारती ने की तथा श्री रवेल सिंह, श्री सुरेश सेठ और श्री फूलचंद मानव ने अपने आलेखों का पाठ किया। इस सत्र में भीष्म जी के नाटक *हानुश, कबिरा खड़ा बजार में, माधवी, मुआवजे, रंग दे बसंती चोला, आलमगीर* की विस्तार से चर्चा हुई। यह सभी नाटक अलग–अलग विषयों और समस्याओं पर केंद्रित थे और भीष्म जी की लेखन प्रतिबद्धता के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में हमेशा दर्शकों के मन में बैठे रहेंगे।

'भीष्म साहनी : समकालीन प्रासंगिकता' विषयक चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री चंद्र त्रिखा ने की और श्री सुदर्शन वशिष्ठ और श्री अरुण होता ने आलेख पाठ किया। श्री चंद्र त्रिखा ने भीष्म जी के अलग–अलग विधाओं में लिखी गई रचनओं के आधार पर कहा कि चाहे उनकी कहानी हों या उनके नाटक वे आज भी सामान्य जनों की उन मुश्किलों और उन सपनों को प्रस्तुत करती है, और आज भी उतने ही प्रासांगिक हैं, जितने उनके लेखन के समय थे। उन्होंने भीष्म जी की उस अंतरदृष्टि का ज़िक्र किया, जिसके सहारे वे बिना आक्रामक हुए भी धर्मनिर्पेक्षता के प्रति प्रतिबद्ध रहे।

अंत में सायं 6.00 बजे श्री केवल धालीवाल के निर्देशन में भीष्म साहनी द्वारा लिखित नाटक 'कबिरा खड़ा बजार में' का मंचन विरसा विहार सभागार में किया गया। ये नाटक मध्यकालीन भारतीय संतों के उस तर्कसंगत दर्शन को उजागर करता है जो अंधविश्वास, जाति–पूर्वाग्रहों, झूठे अहंकार, अंधविश्वास और अतार्किक व्यवहार से समाज को छुटकारा दिलाने की माँग करता है।

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार तथा साहित्य अकादेमी द्वारा दो दिन के समस्त आयोजन को श्रोताओं, लेखकों, तथा मीडिया द्वारा सराहा गया और कहा गया कि यह भीष्म साहनी के प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि थी।